दिनांक–07.02.2025

UG Third Semester MIC (Philosophy)

(लघु उत्तरीय)

जैन के अनुसार अहिंसा का महत्त्व

जैन दर्शन में अहिंसा का सर्वोच्च महत्त्व है और इसे जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है 'हिंसा न करना'। जैन दर्शन में यह सिद्धांत न केवल शारीरिक हिंसा से बचने के लिए है, बल्कि मानसिक और वाचिक हिंसा से भी बचने के लिए है। अहिंसा का पालन करने का अर्थ है कि किसी भी जीवित प्राणी को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। जैन धर्म के अनुयायी इस सिद्धांत का पालन करते हुए न केवल मनुष्यों, बल्कि सभी जीव–जंतुओं और यहाँ तक कि सूक्ष्म जीवों के प्रति भी करुणा और सम्मान का भाव रखते हैं। अहिंसा का पालन जीवन के सभी पहलुओं में किया जाता है, जैसे आहार, वाणी और कर्मों में।

जैन दर्शन में बंधन और उसका कारण

जैन दर्शन में बंधन का अर्थ है आत्मा का कर्मों के बंधन में फँसना। आत्मा स्वभावतः शुद्ध, अविनाशी और अनंत गुणोंवाली होती है, लेकिन कर्मों के बंधन के कारण यह अशुद्ध और सीमित हो जाती है। बंधन का मुख्य कारण राग (आसक्ति), द्वेष (घृणा) और मोह (अज्ञान) हैं। जब जीव अपनी इच्छाओं और वासनाओं के कारण कर्म करता है, तो कर्म-कण आत्मा के साथ जुड़ जाते हैं और आत्मा को बाँधते हैं। इन कर्मों के कारण जीव को जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र में फँसना पड़ता है। इसप्रकार, आत्मा अपने शुद्ध और अनंत गुणों से वंचित हो जाती है और संसार में दुख भोगती है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com